NAME OF THE COLLEGIE – Godda college, Godda

SL No	DATE	NAME OF THE TEACHER	SUBJECT	SEM	TOPIC	MODE ADOPTED
01	18.04.2020	Md Mahtab Alam	TC-201	B.Ed Sem-02	Types of Imagination	PDF

Scanned by CamScanner

[illegible] स्मृति, धारणा और कल्पना में घनिष्ठ सम्बन्ध है।

कल्पना के प्रकार

(Kinds of Imagination)

कल्पना का वर्गीकरण विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने मतानुसार किया है। यहाँ पर दो प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिकों **मैक्डूगल** और **ड्रेवर** का वर्गीकरण क्रमशः अग्रांकित तालिका में दिया जा रहा है-

मैक्डूगल का वर्गीकरण

- कल्पना
  - पुनरुत्पादक कल्पना (Reproductive)
  - उत्पादक कल्पना (Productive)
    - रचनात्मक (Constructive)
    - सृजनात्मक (Creative)

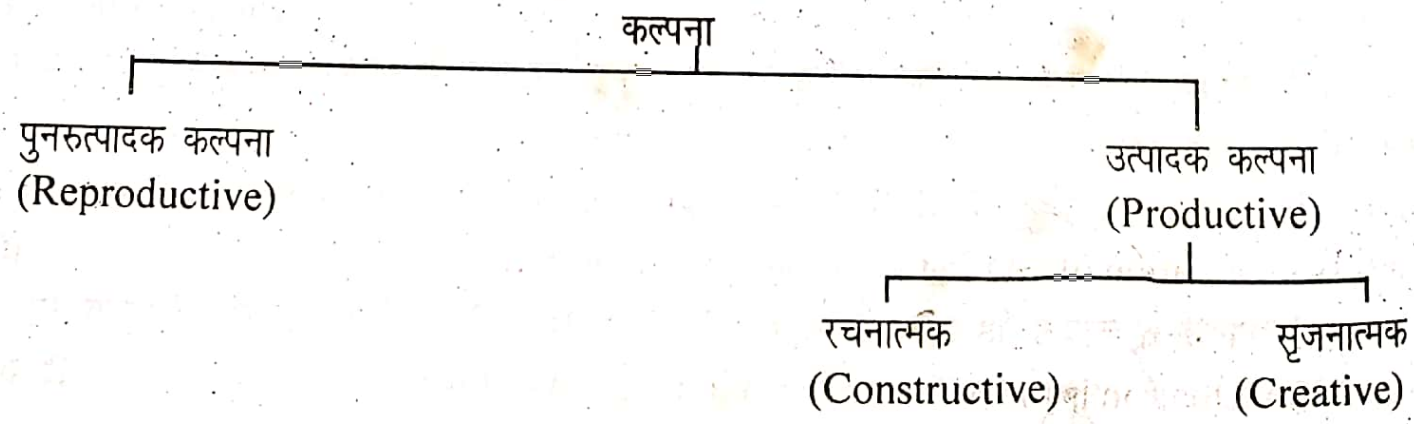

Scanned by CamScanner

(1) पुनरुत्पादक या पुनराभिव्यक्त कल्पना- इस कल्पना में स्मृति द्वारा गत अनुभवों की प्रतिमाओं को ज्यों का त्यों चेतना में लाने का प्रयत्न किया जाता है। इनमें जिन बातों का प्रत्यक्ष ज्ञान हो चुका होता है वे प्रतिमाओं के रूप में मन के सामने उपस्थित होती हैं। बालक जब किसी सुनी हुई पुरानी कहानी को यथासम्भव कल्पना के सहारे उसी रूप में अभिव्यक्त करने का प्रयत्न करता है तो उसे पुनरुत्पादक कल्पना कहते हैं।

(2) उत्पादक कल्पना- इस प्रकार की कल्पना में गत अनुभवों और प्रतिमाओं को एक नवीन क्रम में या नवीनता के साथ प्रस्तुत किया जाता है। इस कल्पना के दो उपयोग हैं- **(क) रचनात्मक कल्पना-** इसका प्रयोग भौतिक पदार्थों के निर्माण में किया जाता है जैसे भवन-निर्माण में एक इंजीनियर पहले से कल्पना करके उसकी रूपरेखा तैयार कर लेता है। **(ख) सृजनात्मक कल्पना-** इस प्रकार की कल्पना का प्रयोग अभौतिक वस्तुओं की रचना में किया जाता है, जैसे संगीत, काव्य, कहानी तथा उपन्यास आदि।

ड्रेवर का सिद्धान्त

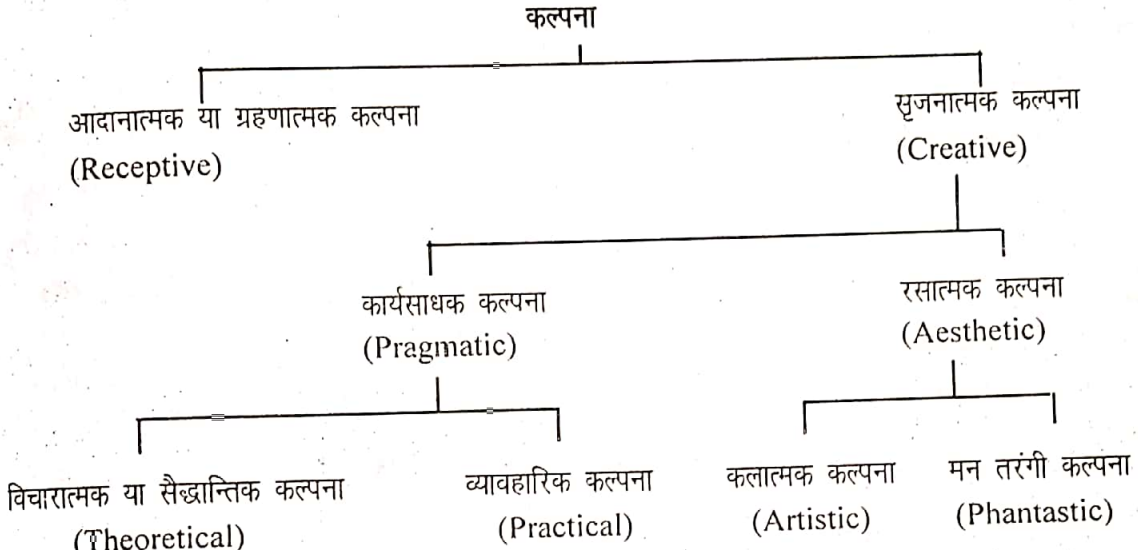

कल्पना के उपर्युक्त प्रकारों का वर्णन संक्षेप में इस प्रकार है-

(1) आदानात्मक कल्पना- इस प्रकार की कल्पना को अनुकरणात्मक कल्पना भी कहते हैं। इसं कल्पना के द्वारा व्यक्ति किसी ऐसी वस्तु को समझने का प्रयत्न करता है जिसे उसने प्रत्यक्ष रूप से कभी नहीं देखा या जाना है, इससे व्यक्ति दूसरों के कहने या बताने से उस विषय की कल्पना करने लगता है। इस कल्पना में दूसरों के नवीन विचार के आधार पर व्यक्ति एक नवीन पदार्थ की कल्पना करता है। शिक्षा में इसी प्रकार की कल्पना का उपयोग होता है। इसमें कल्पना की सामग्री बाहर से ग्रहण की जाती है। जब शिक्षक इतिहास, भूगोल आदि विषयों को पढ़ाता है और मानचित्र आदि दिखाकर समझाता है तब बालक की कल्पना ग्रहणात्मक होती है। इसी प्रकार कहानी, नाटक और उपन्यास आदि में विचार दूसरों के होते हैं और हम उसी आधार पर नई बातों की कल्पना कर लेते हैं। यह निम्न कोटि की कल्पना है।

(2) सृजनात्मक कल्पना- यह उच्च स्तर की कल्पना है। इसमें अतीत अनुभवों के आधार पर व्यक्ति मन में एक काल्पनिक परिस्थिति बनाता है और पूर्व प्राप्त सामग्री की प्रतिमा को नवीन क्रम में व्यवस्थित करता है। यह भविष्योन्मुख होती है। इसके दो प्रकार हैं- (कार्यसाधक या प्रयोगात्मक कल्पना)- इस प्रकार की कल्पना जीवन के उपयोगी कार्यों में सहायता करती है। इसके सहारे व्यक्ति दैनिक जीवन की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने में सफल होता है।

(क) कार्यसाधक कल्पना- आज रेल, तार, टेलीफोन, वायुयान, आकाशवाणी, दूरदर्शन यन्त्र आदि कार्यसाधक कल्पना के ही परिणाम हैं। इस प्रकार की कल्पना विचारक, अन्वेषक और वैज्ञानिक की होती है। यह बाह्य परिस्थिति से नियंत्रित होती है। इसमें किसी विशेष लक्ष्य की पूर्ति के लिए कुछ सीमाओं के अन्तर्गत कल्पना

Scanned by CamScanner

का प्रयोग किया जाता है जैसे पुल निर्माण में इन्जीनियर को कुछ नियमों का पालन करना होता है। इस कल्पना के दो उपभाग हैं-

(i) सैद्धान्तिक या विचारात्मक कल्पना- इस कल्पना के द्वारा उच्चकोटि के सिद्धान्त, विचारों, आदर्शों आदि का निर्माण किया जाता है। वैज्ञानिक न्यूटन का गुरुत्वाकर्षण शक्ति का सिद्धान्त इस कल्पना का उदाहरण है।

(ii) व्यावहारिक या क्रियात्मक कल्पना- इस कल्पना में पूर्व निश्चित सिद्धान्तों का व्यावहारिक रूप पाया जाता है। यह किसी व्यावहारिक उद्देश्य की पूर्ति करती है। भावी जीवन का कार्यक्रम व्यावहारिक कल्पना के आधार पर निश्चित किया जाता है। जैसे भ्रमण, यात्रा आदि की योजनाएँ बनाना। निर्धारित सिद्धान्तों के आधार पर भवन, पुल, मोटर, वायुयान आदि बनाना व्यावहारिक कल्पना पर निर्भर होते हैं।

(ख) रसात्मक या सौन्दर्यात्मक कल्पना-यह कल्पना सौन्दर्य-लिप्सा या भावनाओं (Aesthetic impulse) को सन्तुष्ट करती है। यह कल्पना सौन्दर्य की सृष्टि और प्रशंसा में लीन रहती है। इसमें मस्तिष्क कल्पना के लिए स्वतंत्र रहता है। इसमें किसी प्रकार का बाह्य नियंत्रण नहीं होता। उनकी रचनात्मक क्रिया उन्हें स्वयं आनन्द प्रदान करती है। इसमें उनके हृदय के उद्गार स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त होते हैं, जो कि विभिन्न संवेगों को सन्तुष्ट करते हैं और नवीन कल्पना के लिए प्रेरणा प्रदान करते हैं। रसात्मक कल्पना के दो उपभाग हैं- (अ) कलात्मक कल्पना और (ब) मनतरंगी कल्पना।

(i) कलात्मक कल्पना- इसके द्वारा कला सम्बन्धी कार्यों का सृजन होता है। यह मानव के लिए लाभप्रद होती है। नाटक, कहानी, उपन्यास और चित्र आदि में यही कल्पना पाई जाती है। इसमें कवि, लेखक एवं चित्रकार को अपने चिन्तन पर नियंत्रण करना पड़ता है, उसे स्वाभाविकता और सम्बद्धता आदि नियमों को ध्यान में रखकर रचना करनी पड़ती है। वह 'सत्यं, शिवं, सुन्दरम्' के आदर्शों का निर्माण करती है।

(ii) मनतरंगी कल्पना- इस प्रकार की कल्पना में किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं होता है। यह कल्पना न व्यक्ति के लिए उपयोगी होती है और न समाज के लिए। इसमें मन कल्पना के पंख लगाकर उड़ने लगता है। इस प्रकार की कल्पना को हवाई किले बनाना, ख्याली पुलाव पकाना आदि नाम दिये जाते हैं। किशोरों में यह अधिक पाई जाती है। दिवास्वप्न में कल्पना करना कि मुझे लाटरी में एक लाख रुपये मिल गये हैं और फिर उसका उपयोग करने की विभिन्न योजनाएँ बनाना आदि इस प्रकार की कल्पना का उदाहरण है। इस प्रकार की कल्पना केवल दबी हुई भावनाओं की सन्तुष्टि करती है। इसकी यही उपयोगिता है।

Scanned by CamScanner